हिंदी कहानी में स्त्री विमर्श

राहुल लक्ष्मण कासार*

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.19501704

ABSTRACT

समकालीन हिंदी कहानियों में स्त्री-विमर्श केवल देह मुक्ति तक सीमित न होकर, पितृसत्तात्मक समाज में स्त्री के स्वतंत्र अस्तित्व, अस्मिता और मानवीय अधिकारों की खोज का सशक्त माध्यम बन गया है। उषा प्रियंवदा, मन्नू भंडारी, मंजुल भगत, मालती जोशी और ममता कालिया जैसी प्रमुख लेखिकाओं की कहानियों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि आज की नारी शोषण, पारिवारिक दबाव और वैवाहिक विडंबनाओं को चुनौती देते हुए अपने स्वत्व और समानता के लिए संघर्षरत है। ये कहानियां स्त्री के बदलते स्वरूप, मानसिक द्वंद्व, पारिवारिक संबंधों की जटिलताओं और आत्मनिर्भरता की आकांक्षा को अत्यंत मार्मिकता और यथार्थ के साथ रेखांकित करती हैं।

KEYWORDS: स्त्री-विमर्श, हिंदी कहानी, नारी अस्मिता, पितृसत्ता, स्त्री संघर्ष.

* **राहुल लक्ष्मण कासार**, सहायक प्राध्यापक, बी.एल.डी.ई.ए. वाणिज्य, बी.एच.एस. कला और टी.जी.पी विज्ञान महाविद्यालय, जमखंडी, बागलकोट.

नारी को संसार का सबसे बहुमूल्य रत्न कहा गया है। वह त्याग, बलिदान, सेवा, समर्पण, वात्सल्य की प्रतिमूर्ति है। सामाजिक दृष्टि विधान में नारी पुरुष की पूरक बनकर आई है। साहित्य की कोई विधा नहीं जिसमें नारी का चित्रण न किया गया हो, परंतु दुर्भाग्य की बात है कि भारतीय समाज में आज भी नारी अपने अस्तित्व को लेकर संघर्षरत है।

हिंदी साहित्य में नारीवादी चिंतन की पुरोधा सिमोन द बोउवा को माना जाता है। 'नारी पैदा नहीं होती, बना दी जाती है' की गूंज ने ही स्त्री को संघर्ष के लिए प्रेरित किया। स्त्री-विमर्श को उत्तर आधुनिकता की उपज माना गया है। पिछले तीन दशकों से वैश्विक स्तर पर हुए राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक आंदोलन इस बात के साक्षी हैं कि विश्व धरती के हर अंग में विस्फ़ोटकारी परिवर्तन परिलक्षित हो रहे हैं। इन सबका मनुष्य की चेतना पर प्रभाव पड़ रहा है।

समाज तथा समाज के लोगों द्वारा बनाए गए नियमों में समानता न होने के कारण संघर्ष का जन्म होता है, माँग की आवाज तेज होती है। हिंदी साहित्य में स्त्री-विमर्श के संदर्भ में यकीनन यही हुआ है। अधिक से अधिक महिला कहानीकारों ने अपनी लेखन की ताकत से, यह साबित करने का प्रयास किया है कि हम हाशिए के बाहर हैं। पुरुष प्रधान समाज के कारण हमारा विकास नहीं हो पाया, हमें स्वतंत्रता चाहिए। स्त्री स्वतंत्रता का अर्थ पुरुष की स्वतंत्रता से कोई भिन्न नहीं है। किसी भी स्वतंत्रता का अर्थ एक होता है, उसके व्यक्तित्व का विकास, समाज में उसका स्थान, उसके अधिकार, उसके कर्तव्य और जीवन के निर्माण में उसका सहयोग। डॉ. प्रभा खेतान के अनुसार- "स्त्री न गुलाम रहना चाहती है न ही पुरुष को गुलाम बनाना चाहती है, स्त्री चाहती है मानवीय अधिकार।"

हिंदी कहानियों में स्त्री-विमर्श को प्रस्तुति देनेवाली महत्वपूर्ण लेखिकाओं में उषा प्रियंवदा, मंजुल भगत, मन्नू भंडारी, चित्रा मुद्गल, मृदुला गर्ग, मालती जोशी, नमिता सिंह, सूर्यबाला, ममता कालिया आदि चर्चित नाम हैं। अतः मैंने समकालीन दौर में प्रकाशित कई कहानियों का अध्ययन किया है। अध्ययन से महसूस किया, जो बातें सामने आईं, उनका विवेचन-विश्लेषण इस प्रकार है-

स्त्री मुक्ति के विषय में जब कोई चर्चा होती है तो विशेषकर साहित्य में देह मुक्ति की चर्चा शुरु हो जाती है। देह मुक्ति, नारी मुक्ति नहीं है। यह उसका एक पक्ष हो सकता है। स्त्रियों के शोषण के अनगिनत रूप हैं। 'गुलमोहर के गुच्छे' कहानी संग्रह की कहानी मंजुल भगत की एक ऐसी कहानी है जिसमें एक कामकाजी नारी का चित्रण किया गया है जो दैनिक जीवन की आपाधापी में भी अपने अस्तित्व और स्वत्व की खोज करती रहती है। इस कहानी की नायिका मिसेज नीलिमा वर्मा है। नीलिमा वर्मा ऑफिस के काम निपटाने के बाद घर के कामकाज भी संभालती है। घर पहुंचने के बाद मिसेज नीलिमा वर्मा सिर्फ नीलू रह जाती है। कभी-कभी तो उसे ऐसा लगता है जैसे उसका कोई निजी

अस्तित्व ही नहीं है; मिसेज वर्मा, नीलिमा, नीलू सब अलग-अलग नाटकों में किए गए अलग-अलग रोल हैं। उसके अंदर का जो 'मैं' है, उसका क्या है? स्वत्व को जाननेवाली नीलिमा में सतत एक तृष्णा है। अपने व्यक्तित्व की खोज करने वाली नीलू को जब अचानक यह पता लगता है कि मैं मां बननेवाली हूं तो उसकी आंखों में नवजीवन-सी कुछ चमकने लगता है। अंततः उसकी खोज मातृत्व को प्राप्त करने के बाद समाप्त हो जाती है। मंजुल भगत की यह कहानी एक ऐसी नारी के चरित्र को प्रस्तुत करती है जिसने विकल्प खोजे हैं, निर्णय लिए हैं, चाहे वे समस्याओं के पूर्ण समाधान भी नहीं करते हों।

विवाह स्त्री-पुरुष संबंधों की प्रमुख आधारशिला है। विवाह और स्त्री-पुरुष संबंधों में आए परिवर्तन को भी महिला लेखिकाओं ने बखूबी पकड़ा है। उषा प्रियंवदा की कहानी 'वापसी' पति के प्रति पत्नी की सोच में आम बदलाव तथा बदलते स्त्री-पुरुष संबंधों का चित्रण करती है। मन्नू भंडारी की 'यही सच है', 'एक प्लेट सैलाब', 'तीन निगाहों की एक तस्वीर', 'त्रिशंकु' आदि कहानियां नारी मन की बेबाक अभिव्यक्ति तथा प्राचीन और नवीन मूल्यों के द्वंद्व में फंसी नारी से रू-ब-रू कराती हैं।

परिवार में प्यार और कर्तव्य के नाम पर बड़प्पन की खोखली दुहाई देते हुए किए जाने वाले नारी शोषण को मालती जोशी ने अपनी कहानियों में वाणी दी है। उनकी 'स्वयंवर' कहानी की प्रभा पिताजी के मृत्युपरांत भाई-बहनों, माता के प्रति अपने उत्तरदायित्व को निभाती है। लेकिन परिजनों और माता की स्वार्थवृत्ति की पहचान से उसे अपने अस्तित्व की चिंता सताने लगती है और वह अपना सिर छुपाने के लिए आधार के रूप में एक घर तलाशती है। उनकी ही 'सती' कहानी की पात्र नीलम नारी के शोषण में नारी की भूमिका को स्पष्ट करते हुए कहती है - औरत ही औरत को जलील करे, यह कोई बात है? कहां तो हम पुरुष के अत्याचार और तानाशाही की बात करते हैं, पर यह भूल जाते हैं कि औरत की सबसे बड़ी शत्रु तो औरत ही है।

चित्रा मुद्गल की कहानी 'वाइफ स्वैपिंग' पुरुषों के भोगवादी नए तरीकों की पोल खोलती है। इस कहानी में पत्नी मानी जाने वाली स्त्री का एक रात का भविष्य गाड़ी की चाबियों के हेर-फेर से तय होता है। यहां रिश्तों और परिवार की दुहाई देनेवाली पितृसत्तात्मक पुरुष मानसिकता अपनी भोग लालसा के लिए कैसे हथकंडे अपना सकती है, इसे उखाड़कर सामने रखा है। उर्मिला शिरीष की कहानी 'बलात्कार' में अपने ऊपर बलात्कार होने तथा परिजनों के घृणित व्यवहार के बावजूद अपने अस्तित्व के लिए लड़ने वाली बेगुनाह लड़की का जीवन संघर्ष है। वह कहती है- मैंने कोई गलती या अपराध नहीं किया, जिसके लिए मैं जिंदगी भर आत्मग्लानि में घुलूं। मम्मी, मैं हर स्थिति का सामना करूंगी, चाहे मेरा कोई साथ दे या न दे। इसमें शीलभ्रष्ट की पुरुष संकल्पना को तोड़ते हुए नारी अस्तित्व तथा जीवन की मांगलिकता को उजागर किया है।

यह सर्वविदित है कि आठवें दशक के पूर्व तक महिला कहानीकारों का एक तरह से अकाल ही था, उनकी संख्या बहुत ही कम थी, लेकिन आठवें दशक और उसके बाद तो महिला कथाकारों की कहानियों को लेकर यदि विचार-विमर्श किया जाता तो उसका फलक बहुत विस्तृत हो जाता, इसलिए कतिपय महिला कहानीकारों को लेकर विचार-विमर्श किया गया है। महिला कहानीकारों की कुछ कहानियों को लेकर मंतव्य प्रस्तुत किया गया है।

कच्चे धागे: उषा प्रियंवदा की कहानियों में से यह एक सुप्रसिद्ध कहानी है। इस कहानी की कुंतल प्रमुख पात्र है, जो ऊंचे-ऊंचे सपने देखती है। घर खपरैल का है। मकड़ियों ने जालों का जाल बिछा दिया है, दीवारें अपना असली रंग खो बैठी हैं। चौखट को दीमक खा गए हैं। नल हमेशा बूंद-बूंद करके टपकता रहता है। कुंतल के कपड़ों पर मैल का राज है और येन-केन-प्रकारेण वह दो वक्त का रूखा-सूखा खाना जुटा लेती है। यह सब उसकी रोजमर्रा की जिंदगी के यथार्थ की कहानी कहते हुए से प्रतीत होते हैं।

अपने यथार्थ से सुपरिचित होने के बावजूद कुंतल अपने संपन्न पड़ोसी को दिल दे बैठती है। लेकिन हाथ पीले होने की राह में दौलत का अभाव गाड़ी के आगे रोड़ा बन जाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि आर्थिक संकट के कारण केवल रिश्ते-नाते ही नहीं, बल्कि सारे सपने चकनाचूर हो जाते हैं। कुंतल के सपने भी कच्चे धागे की तरह तार-तार हो जाते हैं।

इस कहानी से स्पष्ट संकेत मिलता है कि सपने तो सपने ही होते हैं। यह जरूरी नहीं है कि वे पूरे ही हों, लेकिन सपने वही देखने चाहिए जिनके पूरा होने में कुछ संभावना तो निहित हो। झोपड़ी में रहकर महल का सपना देखना आसान नहीं होता और ऐसे सपने सचमुच कच्चे धागे सरीखे ही होते हैं, जिनके टूटने में देर नहीं लगती, लेकिन मनुष्य का स्वभाव ही होता है, ऊंचे सपने देखना।

स्वयंवर: मालती जोशी की इस कहानी में स्त्री पात्र प्रभा ऐसी है, जिसके कंधे पर पूरे परिवार के बोझ को वहन करने का उत्तरदायित्व है। वह इसी बोझ को ढोते-ढोते प्रौढ़ हो चुकी है। उसे अपने बारे में सोचने के लिए अवसर नहीं मिलता और वह बाद में 32 साल की आयु में अपाहिज गोपाल दा से शादी करने का प्रस्ताव रखती है। वह कहती है, आपको तो किसी चीज की जरूरत नहीं है गोपाल दा, पर मुझे है, मुझे एक घर चाहिए गोपाल दा, सिर छुपाने के लिए थोड़ी सी जगह चाहिए, क्या आपके घर में थोड़ा स्थान निकल सकेगा? बोलिए, रामचरण का हाथ बंटाती हुई आपके चरणों में पड़ी रहूंगी उम्र भर।

प्रभा आर्थिक दृष्टि से संपन्न है। वह सुशिक्षित भी है। पिता के परलोकवासी होने के बाद भाई-बहनों का बोझ वहन करते-करते वह 32 साल की हो गई है। इतनी उम्र की प्रभा से भला शादी करने के लिए कौन तैयार होता? वह भली-भांति जानती थी कि अब शादी करना इतना आसान नहीं है। इसलिए वह अपाहिज गोपाल दा के सामने विवश होकर शादी का प्रस्ताव रखती है।

इसलिए वह स्वयं अपने लिए वर का वरण कर लेती है और गोपाल दा के साथ अग्नि के सात फेरे ले लेती है।

तीसरा आदमी: मन्नू भंडारी की यह कहानी है। इसमें पति और पत्नी के बीच किसी तीसरे आदमी ने दस्तक दे दी है। इसी तीसरे व्यक्ति आलोक की वजह से सतीश शगुन पर संदेह करने लगा है। खासकर जब आलोक शगुन से मिलने आता है, तब तो यह संदेह का घुन सतीश के मन को खाने लगता है। वह सोचता है कि आलोक और शगुन के बीच कुछ खिचड़ी अवश्य पक रही है। सतीश के मन में हरदम शंका पैदा होती रहती है। आलोक द्वारा शगुन के लिए लिखे गए पत्रों में वह अनावश्यक ही कुछ शंकास्पद शब्द ढूंढने का प्रयास करता है। वह सोचता है उसने स्वयं आलोक के पत्र पढ़े हैं, उनमें उसे कहीं कुछ ऐसा नहीं लगा जिससे वह आहत अनुभव करे, पर हमेशा उसे लगता है कि लिखे हुए शब्दों से परे भी कुछ है। जरूर वरना इन शब्दों में आखिर ऐसा क्या है जो शगुन यों प्रसन्न रहती है।

शगुन के निम्न शब्दों से तो यही प्रतीत होता है कि सतीश और शगुन के प्यार में असीम गहराई रही है। "तुम मुझसे चौगुना काम करवा लो, पर रात को तुम्हारी बाहों के बिना नहीं सो सकती। वहां आते ही सारी थकान मिट जाती है।" आजकल तो पति-पत्नी के बीच तीसरा आदमी आने की बात तो आम हो गई है। वैसे शंका का कोई उपचार तो नहीं है, लेकिन इससे समस्याएं अवश्य पैदा हो जाती हैं।

पीली लड़की: यह ममता कालिया की आधुनिक विचारधारा की कहानी है। आधुनिक विचारधारा में पली हुई, अविवाहित अंग्रेजी की प्रोफेसर बबली है, वहीं दूसरी तरफ पढ़ी-लिखी विवाहित सोना है, जिसका पति विश्वविद्यालय में प्रोफ़ेसर है। बबली स्त्रियों पर हो रहे अन्याय एवं अत्याचार के बिल्कुल विरोध में है। वह अपनी मां से कहती है, "मम्मी वह अगर मुझसे कपड़े धुलवाएगा तो मैं फौरन तलाक दूंगी।"

सोना पढ़ी-लिखी होकर भी अपने पति के सामने सिर उठाने का साहस नहीं करती। वह यदि कभी विचार-विमर्श के लिए किसी गोष्ठी में जाने का मन बनाती है तो उसका पति उसे मना कर देता है। एक बार सोना ने एक गोष्ठी में हिस्सा लिया, उससे किसी ने पूछ लिया कि, "प्रजातंत्र हमारे देश में सफल है या असफल?" सोना ने हंसते हुए उत्तर दिया। "यह सवाल ही सिद्ध करता है कि प्रजातंत्र है और सफल है।"

सोना अपने पति के आगे अपने आप को साहसहीन महसूस करती है और उसी के इशारे पर नाचती है, जबकि बबली स्वतंत्र ख्याल की है। शिक्षा ने आज की स्त्रियों को सजग कर दिया है। वह अपनी अस्मिता को बरकरार रखते हुए वैवाहिक जीवन जीने की आकांक्षा पाले हुए जान पड़ती है। 'पीली लड़की' में इसी आकांक्षा की अभिव्यक्ति हुई है।

लाल बाग का घोड़ा: उषा किरण खान की यह कहानी है। कहानी के

आरंभ में विद्या और कहानी के अंत में भी विद्या। आरंभ और अंत की विद्या के मध्य उसके माता-पिता, रवि, रवि की मां तथा उसके दूसरे पात्र कहानी में गुंथे हुए हैं।

विद्या के मम्मी-पापा हाइली एजुकेटेड हैं। पिता नौकरी में तो मां रिसर्च में व्यस्त हैं। विद्या नन्ही अबोध बालिका घर में आया के भरोसे है। एक माली है जो पेड़-पौधों की देखभाल करता है। विद्या के मम्मी-पापा के पास गंगा के किनारे एक छोटा-सा बंगला है। विद्या जिज्ञासु प्रवृत्ति की बालिका थी। विद्या को उसकी मां सुंदर, स्मार्ट, तेज और पापा बेहद प्यारे लगते थे।

लालबाग का घोड़ा उसका साथी-सा है; दुःख का साथी सुख का सखा। माली ने विद्या से कहा, "बेबी रात के तूफान में नीम की डाल टूटकर गिर पड़ी थी। घोड़े का देखिए कान टूट गया है।" "ओहो अच्छा सफाई कर दो।" इतना कहकर विद्या अंदर चली गई। विद्या पूरी तरह से टूट गई थी। एक तो उसके लालबाग के घोड़े का कान टूट गया था और दूसरे रवि की मां की बात; इन दोनों से वह आहत हो गई थी। घोड़ा ही एकमात्र उसके सुख-दुःख का साथी था।

यह कहानी एक ऐसी जिज्ञासु लड़की की कहानी है, जो हमेशा यह सोचती है कि उसके सपनों का राजकुमार घोड़े पर सवार होकर आएगा, लेकिन नियति का कुछ भरोसा नहीं, नियति कभी-कभी सपनों को बदल भी देती है। विद्या को पापा के चले जाने का बेहद गम है, लेकिन मां श्यामली के चेहरे पर उनके चले जाने का कोई गम नहीं है। लालबाग का घोड़ा दरअसल मिट्टी से बना हुआ है, जो पाठकों को प्रारंभ में भ्रम में तो डाल ही देता है।

पुरुषों के उत्पीड़न ने स्त्री को इतना निरीह बना दिया है कि वह स्त्री होने के पक्ष में संकोच से मर जाती है। इसी ऊहापोह में वह पुरुषों को जताने का प्रयत्न करती रहती है कि कहीं से भी वह पुरुषों से कम नहीं है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. हिन्दी कहानी आठवां दशक : मधुर उप्रेती
2. गुलमोहर के गुच्छे : मंजुल भगत
3. मन्नू भंडारी की श्रेष्ठ कहानियां
4. स्वयंवर, सती : मालती जोशी